**ओ३म्**

**‘जीवात्मा क्या है तथा उसका स्वरूप?’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 जीवात्मा के लिए जीव व आत्मा शब्दों का प्रयोग भी होता है। यह तीनों शब्द मनु ष्य में जो एक चेतन व संवेदनशील पदार्थ है, उसके लिए प्रयोग में लाये जाते हैं। आत्मा के रहने से ही मनुष्य व अन्य प्राणी जीवित रहते है और उनकी मृत्यु तभी कहलाती है जब कि जीवात्मा शरीर को छोड़कर निकल जाता है। यह जीवात्मा क्या है व इसका उद्गम कैसे होता है? इसका उत्तर शास्त्र और विचार करने से जो मिलता है उसको प्रस्तुत करते हैं। संसार का नियम है कि कोई भी नया पदार्थ न तो बनाया ही जा सकता है और न ही बने हुए पदार्थ को नष्ट ही, अस्तित्व शून्य, किया जा सकता है। पदार्थ का रूप व स्वरूप परिवर्तन हुआ करता है, उसका पूर्ण अभाव नहीं होता है। जैसे मिट्टी से कई पदार्थ बनते हैं। इसकी ईंटे बनाकर गृह का निर्माण कर सकते हैं। मिट्टी से भवन की दीवार सहित मिट्टी के बर्तन व अनेक उपयोगी सामान बनाये जा सकते हैं। परन्तु अब हम ईंट, दीवार व बर्तनों को नष्ट करते हैं तो वह अपने मूल कारण मिट्टी के रूप में आ जाते हैं। मिट्टी भी मूल प्रकृति अर्थात् सत्, रज व तम गुणों वाली त्रिगुणात्मक प्रकृति से बनी है। संसार के सभी पदार्थ इस मूल कारण प्रकृति से ही बने हैं। हमारा शरीर भी प्रकृति के अणु व परमाणुओं से ही बना है। इसी प्रकार हमारा आत्मा भी एक मूल पदार्थ है। यह किसी पदार्थ से नहीं बना है, अतः यह किसी भी कारण से कभी नष्ट नहीं हो सकता है। आत्मा किसी मूल पदार्थ का कार्य पदार्थ नहीं है। यह कारण व कार्य दोनों एक अर्थात् अपने कारण रूप व मूल रूप में ही रहता हैं। हां, जब सृष्टि उत्पन्न होती है तो परमात्मा सृष्टि के निर्माण की आरम्भ अवस्था में जब मूल प्रकृति में विक्षोभ व परिवर्तन करते हैं तो जो आरम्भिक पदार्थ महतत्व व पांच तन्मात्रायें आदि बनती हैं, उससे ब्रह्माण्ड की अनन्त आत्माओं के लिए सूक्ष्म शरीर बनाते हैं जो प्रलयावस्था पर्यन्त जीवात्मा के साथ रहते हैं। जब जीवात्मा का मनुष्य व अन्य प्राणियों के रूप में जन्म होता है तो जीवात्मा इस सूक्ष्म शरीर के साथ ही पिता-माता के शरीरों में प्रविष्ट होता है और कालान्तर में जब मृत्यु होती है तो आत्मा और यह सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर से निकल जाता है। मृत्यु के समय शरीर से आत्मा व सूक्ष्म शरीर दोनों ही एक साथ निकलते हैं।

 आत्मा का स्वरूप हमारे शास्त्रों में विस्तार से वर्णित है जो कि तर्क एवं युक्तियुक्त है। शास्त्रों के अनुसार जीवात्मा एक चेतन, सूक्ष्म, अल्प परिमाण, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ, आकार रहित, जन्म मरण धर्मा तथा सुख व दुःख को अनुभव करने वाला है। मनुष्य जो कर्म करता है, उन कर्मों का भोग मिलने तक उसके संस्कार आत्मा पर अंकित रहते हैं। जीवात्म अनादि है, अमर व अविनाशी है, यह शस्त्र से काटा नहीं जा सकता, अग्नि से जलता नहीं है, वायु से सूखता नहीं है और जल से गीला नहीं होता। शरीर के मर जाने पर भी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है। जीवात्मा का अस्तित्व अनादि व अनुत्पन्न है अतः यह सदा बनेगा रहेगा। जीवात्मा की सत्ता बनी रहने के कारण इसे सत्य कहते हैं। असत्य उस काल्पनिक पदार्थ को कहते हैं कि जिसका अस्तित्व न हो परन्तु व्यवहार में उसका प्रयोग किया जाता हो। आत्मा का अस्तित्व असंदिग्ध रूप से विद्यमान है अतः आत्मा सत्य है। जीवित अवस्था में आत्मा की दो अवस्थायें होती हैं एक सुख व दूसरी दुःख की। सुख व दुःख की अनुभूमि होने से ही यह चेतन पदार्थ कहलाता है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र व किये गये शुभ व अशुभ कर्मों के फल भोगने में परतंत्र है। संसार में हम देखते हैं कि लोग परस्पर अच्छे व बुरे कर्मों वा व्यवहार का सेवन करते हैं। किसी मनुष्य का किसी के प्रति अच्छा या बुरा व्यवहार करना जीव की स्वतन्त्रता में आता है। परमात्मा उसे बुरा काम करने से दृणता से रोकता नहीं है। इसी कारण देश और समाज में लोग छोटे व बड़े अनेकानेक प्रकार के अपराध करते हैं। अपराध कर लेने के बाद उस जीव को उसके कर्मों का अच्छा या बुरा, सुख व दुख रूपी फल देना ईश्वर के हाथ में है। ईश्वर चेतन, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व सच्चिदानन्द होने के कारण सभी जीवों के मानसिक, वाचिक एवं दैहिक कर्मों का साक्षी होता है। अतः वह अपने विधान के अनुसार जीवों को यथा समय उनका फल देता है। कोई भी जीवात्मा अपने किसी शुभ व अशुभ कर्म के फल से बच नहीं सकता। ईश्वर न्यायकारी ही नहीं आदर्श न्यायकारी है, अतः उसका न्याय भी आदर्श न्याय है। हमारे ऋषि मुनि इसका विचार करते हैं और इसका उल्लेख उनके बनायें ग्रन्थों में मिलता है। **जीव का स्वरूप और उसके गुण, कर्म व स्वभाव कैसे हैं? इसका उत्तर देते हुए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखा है कि जीव चेतनस्वरूप है। इसका स्वभाव पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। जीव के सन्तानोत्पत्ति, उन का पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे-बुरे कर्म हैं।**

 न्यायदर्शन और वैशेषिक दर्शन निम्न दो सूत्र आते हैं। **‘इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनोलिंगमिति।।’** तथा **‘प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवन मनोगतीन्द्रियान्तर्विकाराः सुखदुःख इच्छाद्वेषौप्रयत्नाश्चात्मनोलिंगानि।।’** इनका अर्थ है कि (इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा (द्वेष) दुःखादि की अनिच्छा, वैर, (प्रयत्न) पुरुषार्थ, बल, (सुख) आनन्द, (दुःख) विलाप, अप्रसन्नता, (ज्ञान) विवेक, पहिचाना, ये गुण न्यायदर्शन व वैशेषिक दर्शन में तुल्य हैं, परन्तु वैशेषिक दर्शन में (प्राण) प्राणवायु को बाहर निकालना, (अपान) प्राण को बाहर से भीतर को लेना, (निमेष) आंख को मींचना, (उन्मेष) आंख को खोलना, (जीवन) प्राण का धारण करना, (मन) निश्चय, स्मरण और अहंकार करना, (गति) चलना, (इन्द्रिय) सब इन्द्रियों को चलाना, (अन्तर्विकार) भिन्न भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष, शोकादियुक्त होना, ये जीवात्मा के गुण हैं। जीवात्मा के यह गुण परमात्मा में नहीं हैं। **इन्हीं गुणों से आत्मा की प्रतीती करनी चाहिये।** यह भी ध्यान रखना चाहिये ये गुण जड़ स्थूल पदार्थों में नहीं होते हैं। **जब तक आत्मा देह व शरीर में होता है, तभी तक यह गुण प्रकाशित रहते हैं और जब शरीर छोड़ कर चला जाता है, तब यह गुण मृतक शरीर में नहीं रहते। जिस के होने से जो हों, और न होने से न हों, वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है, वैसे ही जीव और परमात्मा का विज्ञान, इन दोनों के गुणों द्वारा होता है।**

 इसके साथ ही जीव के विषय में कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातें भी जान लेते हैं। जीव शाश्वत्, अविनाशी एवं नित्य पदार्थ है। ईश्वर भी नित्य है और सृष्टिकर्ता है। जीवों के पूर्व जन्मों के पाप व पुण्यों के दुःख व सुख रूपी फल देने के लिए ही ईश्वर ने इस सृष्टि को बनाया है और ईश्वर ही इसका पालन करता है। मनुष्य योनि उभय योनि अर्थात् कर्म व भोग योनि दोनों है और अन्य पशु, पक्षी, कीट व पतंग आदि योनियां केवल भोग योनि है। परमात्मा ने मनुष्य को अन्य इन्द्रियों व सामर्थ्य के साथ एक बुद्धि जैसी सत्यासत्य का विवेचन करने वाली शक्ति बुद्धि दी है। इस बुद्धि से मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को जान सकता है। वेद, दर्शन, उपनिषद व सत्यार्थपकाश आदि ग्रन्थ बतातें हैं कि जीवात्मा को मनुष्य जन्म पाप व पुण्यों के समान वा पुण्य कर्मों के अधिक होने पर मिलता है। मनुष्य योनि में जहां वह अपने पूर्व कर्मों के सुख-दुःख रूपी फल भोगता है वहीं नये शुभ व अशुभ कर्मों को करता भी है। यदि मनुष्य वेदों व वैदिक विचारधारा के सम्पर्क में आ जाये तो उसे अपने जीवन का उद्देश्य आसानी से समझ में आ जाता है और साथ ही उद्देश्य, जो कि मोक्ष व मुक्ति है, को प्राप्त करने के साधनों का ज्ञान भी हो जाता है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य बुरे कर्मों का त्याग व शुभ कर्मों का अनुष्ठान है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य ईश्वर व जीवात्मा आदि पदार्थों के स्वरूप व संसार को अच्छी प्रकार से जानकर ईश्वर का ध्यान, स्तुति, प्रार्थना और उपासना आदि करते हुए तथा यज्ञादि शुभकर्मों को करते हुए ईश्वर साक्षात्कार करना है जिससे मनुष्य बुरी वासनाओं व बुरे कर्मों में प्रवृत्ति से बच जाता है और ईश्वर को प्राप्त होता है। समाधि ही मोक्ष का द्वार है जिससे मनुष्य जन्म व मरण के चक्र से लम्बी अवधि तक के लिए मुक्त हो जाता है। **यह मुक्ति योगी, ऋषि मुनि व विद्वानों को ही प्राप्त होती है। असत् कर्म करने वालों को, चाहे वह किसी भी मत को मानते हों, मोक्ष की प्राप्ति कभी सम्भव नहीं है।** वैदिक धर्म की शरण में आकर ही जीवन के स्वरूप को यथार्थ रूप में जानकर ही मनुष्य अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है।

 हमने इस लेख में जीवात्मा के स्वरूप सहित उसके उद्देश्य व उसकी प्राप्ति की चर्चा की है। आशा है कि कुछ मित्रों को यह लेख लाभप्रद हो। इति ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड की अप्राप्य कृति ‘साम संगीत सुधा’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड जी आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान हुए हैं। आचार्य जी ने गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा प्राप्त की और स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा से दक्षिण भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया। उनके जीवन पर हम कुछ समय पूर्व एक लेख दे चुके हैं। आचार्य जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं के विद्वान होने के साथ हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं के अच्छे कवि भी थे। आपने सामवेद का अंग्रेजी में भाष्य भी किया है। हमारी जानकारी में यह भाष्य भी सम्प्रति अनुपलब्ध है। यह स्थिति आर्यसमाज जैसी संस्था के लिए दुःखद है कि हमारे उच्च कोटि के विद्वानों का साहित्य एक बार समाप्त हो जाने के बाद पाठकों के लिए उपलब्ध नहीं हो पाता। आचार्य जी के ग्रन्थों के विषय में लेख के अन्त में जानकारी देंगे। आइये! अभी ‘साम संगीत सुधा’ लघु ग्रन्थ की चर्चा करते हैं। सामवेद में कुल 1875 मन्त्र हैं। आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड जी ने सामवेद के 122 मन्त्रों को चुन कर उन पर कहीं दो तो कहीं चार और कहीं अधिक पंक्तियों की बहुत ही प्रभावशाली कवितायें रची है। भाषा सरल व सुबोध है। इन कविताओं का आनन्द इन्हें पढ़कर ही लिया जा सकता है। हम उनके द्वारा रचित सामवेद के मन्त्रों पर आधारित कुछ कवितायें भी पुस्तक से प्रस्तुत करेंगे। इस पुस्तक के बारे में यह बता दें कि ‘साम संगीत सुधा’ का प्रकाशन दिसम्बर, 1966 में हुआ था। मूल्य 50 पैसे था। पुस्तक के अन्त में लेखक महोदय ने आवश्यक शब्द कोष भी दिया है। पुस्तक का समस्त पद्यानुवाद आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड जी ने ही किया है। यह भी बता दें कि आचार्य जी पहले देव मुनि वानप्रस्थ के नाम से जाने जाते थे। आपने वेदों पर अनुसंधान का कार्य किया। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के आप प्रधान और **‘यज्ञ योग ज्योति’** के सम्पादक भी रहे। दिसम्बर, सन् 1966 में आप आनन्द कुटी, ज्वालापुर में निवास करते थे। यह भी बता दें कि यह पुस्तक आचार्य जी ने स्वयं ही प्रकाशित की और इसके लिए आपको आर्य दानवीर चौधरी प्रताप सिंह जी, करनाल के न्यास से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ था। चौधरी प्रताप सिंह जी प्रसिद्ध ऋषि भक्त थे। आपने पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी को भी रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ वा रेवली से प्रकाशित अन्य उच्च कोटि के अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए आर्थिक सहयोग दिया था जिनकी चर्चा पंडित मीमांसक जी ने उन उन ग्रन्थों में की है। पं. विश्वनाथ विद्यालंकार जी के अर्थववेद भाष्य का अधिकांश भाग आपके आर्थिक सहयोग से ही प्रकाशित हुआ है। अब इसके परोपकारिणी सभा सहित गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से भी संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

 पुस्तक के लेखक आचार्य धर्मदेव जी ने इस पुस्तक की भूमिका में पुस्तक के लेखन का विचार कैसे आया, इस पर भी प्रकाश डाला है। सामवेद का क्या अर्थ है, इस पर भी व्याकरण के आधार पर विचार प्रस्तुत किये हैं। वह लिखते हैं कि ‘इस पुस्तिका में सामवेद के 122 मन्त्रों का हिन्दी पद्यानुवाद प्रस्तुत किया है। जब मेरी Some Psalms of the Sam Veda Samhita नाम पुस्तक (जिसमें 122 मन्त्रों का अंग्रेजी पद्यानुवाद प्रकाशित हुआ) अजन्ता प्रेस ज्वालापुर में छप रही थी तो उसके कुछ कर्मचारियों और व्यवस्थापक महोदय ने भी यह इच्छा प्रकट की कि अंग्रेजी से अनभिज्ञ नर-नारियों के लाभ के लिये (जिन की संख्या हमारे देश में बहुत अधिक है) यदि साम वेद के मन्त्रों का ऐसा ही संग्रह हिन्दी कवितानुवाद सहित प्रकिशत हो जाये तो उसके स्वाध्याय से सर्वसाधारण को बड़ा भारी लाभ हो सकता है। पद्यानुवाद जहां भक्ति भावना को बढ़ाने की दृष्टि से अधिक उपयुक्त हो सकता है, वहां उसको स्मरण करना भी सुगम होता है। अतः आप ऐसा एक संग्रह हिन्दी कवितानुवाद सहित अवश्य तैयार करके छपवाने की कृपा करें। अपने मित्रों और प्रेमियों की यह अभिलाषा मुझे (आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड जी को) उचित प्रतीत हुई, अतः उसकी पूर्ति के लिये यह लगभग 120 मन्त्रों का कवितानुवाद कुछ ही दिनों में तैयार कर लिया गया और वह भारतीय स्वाध्यायशील भक्त प्रेमियों के लाभार्थ करनाल के वैदिक धर्म और संस्कृति के अत्यन्त उत्साही प्रेमी श्री चौ० प्रताप सिंह जी रईस की उदार आर्थिक सहायकता से जनता के सम्मुख प्रस्तुत है।

 भूमिका में इस बात का निर्देश भी आवश्यक है जिस प्रकार ऋग् वेद का प्रधान विषय ज्ञान, यजुर्वेद का कर्म, अथर्व वेद का विज्ञान है, वैसे सामवेद का प्रधान विषय भक्ति वा उपासना है, साम शब्द साम-सान्त्वने इस धातु से बनता है जिसका अर्थ सान्त्वना व शान्ति देना है। वेद शब्द विद् धातु से सिद्ध होता है जिस का अर्थ ज्ञान है। अतः सामवेद सान्त्वना वा शान्ति के उपायों को बताने वाला वेद है। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य शान्ति का अभिलाषी है और शान्ति परमेश्वर की भक्ति अथवा उपासना के बिना कभी प्राप्त नहीं हो सकती, अतः सामवेद में प्रधानतया भक्ति के सच्चे स्वरूप का प्रतिपादन है। उणादि कोष 1.14 में साम शब्द को षो-अन्तकर्मणि इस धातु से मनिन् प्रत्यय करके सिद्ध किया गया है। अन्तकर्मणि का अर्थ कई विद्वान् ज्ञान, कर्म, भक्ति इनमें से अन्तिम यह करते हैं किन्तु वैदिक धर्मोद्धारक शिरोमणि स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द जी ने उसका अर्थ स्यन्ति-खण्डयन्तिदुःखानि येन तत् (अत्र सर्वधातुभ्यो मनिन् षो-अन्तकर्मणिइतिधातोः) ऋग्वेद 1-62-2 भाष्य इत्यादि रूप में किया है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है और जिससे सामवेद का महत्व और भी स्पष्टता से ज्ञात हो सकता है जिस के आधार पर भगवद्गीता 10.22 में वेदानां **‘सामवेदोऽस्मि’** यह वचन पाया जाता है। महर्षि दयानन्द की उपर्युक्त व्युत्पत्ति के अनुसार साम का अर्थ दुःख विनाशक है। पुस्तक में इसके बाद सोम के अनेक आध्यात्मिक अर्थों पर भी प्रकाश डाला गया है।

 भूमिका के बाद आचार्य धर्मदेव जी के सम्पूर्ण सामवेद के अंग्रजी अनुवाद का विज्ञापन है। इसमें बताया गया है कि यह भाष्य महत्वपूर्ण भूमिका तथा आवश्यक टिप्पणियों सहित है। इस विज्ञापन में व्यवस्थापक, सत्साहित्य प्रकाशन, आनन्द कुटीर, ज्वालापुर, उत्तर प्रदेश की ओर से कहा गया है कि देश विदेश के सब अंग्रेजी शिक्षित विद्वानों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड भूतर्पूव प्रधान सार्वदेशिक धर्मार्य सभा दिल्ली ने सम्पूर्ण सामवेद का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद (अनेक मन्त्रों का कवितात्मक) प्रमाणार्थ आवश्यक संस्कृत तथा अंग्रेजी टिप्पणियों सहित कर लिया है। इसके बाद पुस्तक के अग्रिम व प्रकाशन के बाद के मूल्य सूचित किये गये हैं।

पुस्तक के नाम के अनुसार इसके बाद सामवेद के चुने हुए मन्त्रों को प्रस्तुत कर मन्त्र का पता, ऋषि, देवता व छन्द दिये गये हैं। इनके बाद मन्त्र का पद्यानुवाद दिया गया है। हम कुछ मन्त्रों के पद्यानुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं:

**1 ओ३म् अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।। साम. 1.660**

**भरद्वाजो बार्हस्पत्यऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः।**

आवो देव हमारे हृदय में, ज्ञान ज्योति जगाने को

पाप ताप जो त्रिविध हमारे उनको दूर भगाने को।

हम जो तेरी स्तुति करते हैं, भक्ति-शक्ति का दे दो दान,

दो उपदेश शुभान्तर्यामिन्, जिससे हो सबका कल्याण।।

**2** **ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने।। सामवेद 2.1474**

**भरद्वाजो बार्हस्पत्यऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः।**

तू है देव पुरोहित सबका, सर्व जगत् हितकारी है

सब यज्ञों का तू है होता, स्वार्थ-रहित उपकारी है।

सत्य-निष्ठ जो ज्ञानी जन हैं, सबमें तुझको लखते हैं

सब मनुजों में प्राणिमात्र में, प्रेमभाव वे रखते हैं।।

**8 ओ३म् उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।। सामवेद 14**

**आयुंख्वाहि ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः।**

हे सर्वोत्तम नेता तेरी, ओर रातदिन आते हैं

शुद्ध-बुद्धि अरु शुद्ध कर्म की, भेंट हाथ में लाते हैं।

ज्ञान हमें हो प्राप्त तथा आनन्द यही अभिलाषा है

तुम से ही पूरी हो सकती, नहीं अन्य से आशा है।।

**10 ओ३म् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।। सामवेद 31**

**प्रस्कण्व ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः।**

सूर्य चन्द्र गिरि सागर तरु सब, उसकी याद दिलाते हैं

जो सर्वज्ञ सभी में व्यापक, उस तक बुध ले जाते हैं।

ये सब झण्डे बन कर हरि को, ही दिन रात दिखाते हैं

जो ज्योतिर्मय तम का नाशक, उसका स्मरण कराते हैं।

**103 ओ३म् शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।। सामवेद 33**

व्याप्त है सर्वत्र जो वह, दिव्य माता शान्ति दे

कामनाएं पूर्ण करती, शुद्ध जो वह कान्ति दे।

इष्ट सुख की प्राप्ति के हित, शान्ति दायक हो हमें

भक्ति रस के पान के हित, वह सहायक हो हमें।

शान्ति सुख की वृष्टि होवे, सब जगह कल्याण हो

रोग पातक दूर होवें, दिव्य जननी ध्यान हो।।

पुस्तक में कहा गया है कि इसमें 122 मन्त्रों का पद्यानुवाद है परन्तु पुस्तक में 103 ही मन्त्रों का पद्यानुवाद है। इसके बाद पुस्तक में मन्त्रों में आये **‘शत (100) कल्प दुर्बोध वैदिक शब्द कोषः’** को एक तालिका में प्रस्तुत किया गया है। इस तालिका में पुस्तक की पृष्ठ संख्या, वैदिक शब्दोल्लेख, शब्द का अर्थ तथा अन्तिम कालम में निघण्टु निरुक्त धातुपाठादि निर्देश किया गया है।

पुस्तक के अन्दर के कवर पृष्ठ पर ‘पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड रचित कुछ अन्य पुस्तकें’ के अन्तर्गत एक सूची दी गई है जिसमें उनके ग्रन्थों का उल्लेख है। जिन पुस्तकों के नाम दिये गये हैं वह हैं 1- वेदों का यथार्थ स्वरूप, 2-वैदिक कर्तव्य शास्त्र, 3-भारतीय समाज शास्त्र, 4-वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी अष्टम् संस्करण, 5-अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी, 6-आर्यधर्म निबन्ध माला, 7-बौद्धमत और वैदिक धर्म (यह ग्रन्थ सम्प्रति श्रीघूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डोसिटी से भव्य रूप में प्रकाशित होकर उपलब्ध है।), 8-स्त्रियों का वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकाण्ड में अधिकार, 9-हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि तृतीय संस्करण, 10- Maharishi Dayananda and Satyarth Parkash 2nd Edition.

हमने **‘साम संगीत सुधा’,** इस दुलर्भ पुस्तक का परिचय पाठकों के लिए प्रस्तुत किया है। हमारी विनती है कि किसी एक आर्य प्रकाशक को इसका प्रकाशन कर देना चाहिये। हमें यह भी लगता है कि **‘हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि’** का भी प्रकाशन होना चाहिये। इसी के साथ हम इस परिचय को समाप्त करते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**